मरूमेघ
किसान ई – पत्रिका
www.marumegh.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
©2016 marumegh
ISSN:2456-2904

स्ट्राबेरी की खेती – अधिक आय का अच्छा साधन

कल्पना यादव, बरखा रानी एवं मालचन्द जाट
राजस्थान कृषि महाविद्यालय उदयपुर

स्ट्राबेरी एक महत्वपूर्ण नरम किस्म का फल हैं। जिसको विभिन्न प्रकार की भूमि तथा जलवायु में उगाया जा सकता हैं। इसका पौधा कुछ ही महिनों में फल दे सकता है। इस फसल का उत्पादन आधुनिक स्थिति में बहुत लोगों को रोजगार दे सकता है। स्ट्राबेरी में बहुत महत्वपूर्ण प्रकार के एंटीऑक्सिडेंट, विटामिन 'सी', प्रोटीन और खनिज प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं।

जलवायु व भूमि :– स्ट्रॉबेरी फल का उत्पादन भिन्न – भिन्न प्रकार की जलवायु में किया जा सकता हैं। इसके फलों व नाजुक फलों को पाले से बचाना जरूरी हैं। परन्तु रेतिली – दोमट (sand - loam) भूमि इसके लिये सर्वोत्तम है। भूमि में जल निकासी अच्छी होनी चाहिये।

स्ट्रॉबेरी की किस्में :– स्ट्राबेरी की बहुत सी किस्में उगायी जाती हैं। परन्तु मुख्यतः निम्नलिखित किस्मों का उत्पादन हरियाणा में किया जाता हैं।

1. **कैमारोजा :–** यह एक कैलिफोर्निया में विकसित की गई महत्वपूर्ण किस्म है व थोड़े दिन में फल देने वाली हैं। इसका फल बहुत बड़ा व मजबूत होता है। इस फल की महक अच्छी होती है। यह लम्बे समय तक फल देती है और वायरस रोाक वैरासटी हैं।
2. **चैंडलर –** यह भी कैलिफोर्निया में विकसित किस्म हैं। इसका उत्पादन विभिन्न स्थितियों में किया जा सकता है। इसका फल आकर्षक होता है। परन्तु इसकी त्वचा नाजुक होती है। इसलिये स्थानान्तरण में ध्यान देना आवश्यक हैं।
3. **स्वीट चार्ली :–** इस किस्म के पौधे जल्दी फल देते हैं। इसका फल बहुत मीठा होता है। पौधे में कई फंफूद रोगों के प्रतिरोधिता पाई जाती है।
4. **ओसो ग्रैन्ड :–** यह भी कैलिफोर्निया में विकसित किस्म हैं। जो छोटे दिनों में फल देती है। इसका फल बड़ा होता है तथा खानें व उत्पाद बनाने के लिये अच्छा होता हैं। परन्तु इसके फल में फटने की समस्या देखी जा सकती हैं।

5 **ओफरा :–** यह इजरायल में विकसित किस्म हैं । यह एक अगली किस्म हैं और इसका फल उत्पादन जल्दी आरंभ हो जाता हैं।

पौधे लगाने का समय :– पौधों की रोपाई 10 सितम्बर से 10 अक्टूबर तक की जानी चाहिये। रोपाई के समय अधिक तापमान होने पर पौधों को कुछ समय बाद अर्थात् 20 सितम्बर तक शुरू किया जा सकता है।

1 हैक्टेयर में 50 हजार तक पौधे लगते है और इससे 20 टन उत्पादन लिया जा सकता हैं बाजार में अभी स्टॉबेरी का मूल्य 120 – 150 या 200 रू। किलोग्राम तक है। आमदनी तकरीबन 8 लाख से 12 लाख तथा पहली बार में 6 लाख/ प्रति हैक्टेयर में खर्च आता हैं।

खाद व उर्वरक :– खाद व उर्वरकों का प्रयोग मिट्टी की जाँच के आधार पर होना चाहिये। साधारण रेतिली भूमि में 10–15 टन खड़ी गोबर की खाद/एकड़ की दर से भूमि तैयारी के समय बिखे कर मिट्टी में मिला देना चाहिये। भूमि की तैयारी के समय 100 कि.ग्रा. फॉस्फोरस व 60 कि.ग्रा. पोटाश प्रति एकड़ डालना चाहियें। रोपाई के उपरान्त सिंचाई विधि द्वारा निम्नलिखित घुलनशील उर्वरकों को दिया जाना चाहिये।

समय	घुलनशील उर्वरकों की मात्रा ग्राम / एकड़ / दिन		
	N	P	K
10 अक्टूबर से 20 नवम्बर	250	200	400
21 नवम्बर से 20 दिसम्बर	600	200	600
21 दिसम्बर से 20 जनवरी	250	160	600
21 जनवरी से 28 फरवरी	700	200	900
1 मार्च से 31 मार्च	600	200	900

सुक्ष्म तत्वों के लिये पौधों पर छिड़काव किया जाना चाहिये।

सिंचाई :– इन पौधों के लिये उत्तम गुणवत्ता का पानी होना चाहिये। पौधों को लगाने के तुरन्त बाद सिंचाई करना आवश्यक हैं। फुल आने पर सुक्ष्म फव्वारा सिंचाई को बदल कर टपका विधि काम में लेनी चाहिये।

मल्चिंग :– पौधों पर फूल आने पर मल्चिंग करना आवश्यक हैं।

मल्चिंग काले रंग की 50 माइक्रोन मोटाई वाली पॉलिथीन चदर से करनी चाहिये जिससे खरपतवारों पर नियंत्रण एक फलों को सड़ने से बचाया जा सके। इसके अतिरिक्त मल्चिंग भूमि से पानी के वाष्पीकरण को भी कम करती है।

उपज :– प्रति पौधा 200–300 ग्राम (रोग रहित) फलों का उत्पादन इन विधियों के उपयोग से किया जा सकता हैं।

उपयोग : स्ट्रॉबेरी फागार्या जाति का एक पेड़ होता है। और अपने आप में एक विशेष गन्ध इसकी पहचान बन गई है। से ताजा खाने के साथ–साथ, इसे सरंक्षित कर जैम, रस, पाई, आइस्क्रीम मिल्क शेक आदि के रूप में काम में लाया जा सकता है।

कीट :– लगभग 200 से अधिक कीटों की प्रजातियाँ स्ट्रॉबेरी की फसल को सीधे या परोक्ष रूप से हमला करने के लिये जानी जाती हैं। ये कीटों में पतिंगे, मक्खियाँ, chafers (चेफर्स), स्ट्रॉबेरी जड़ पीविल्स, झरबेरी एक प्रकार का कीड़ा, स्ट्रॉबेरी रस भृंग, स्ट्रॉबेरी मुकुट कीट, कण, एफिड़ (चैंपा) इत्याादि शामिल हैं।

रोग :– इसके पौधे विभिन्न रोगों के शिकार हो सकते हैं। इसकी पत्तियां खस्ता फंफूदी, पत्ता स्पॉट, पत्ता ब्लाइट से संक्रमित हो सकती हैं। शीर्ष व जड़े Red stele, वर्टिसिलियम विल्ट, Root Rot व नेमोटोड्स के शिकार हो सकता है। फलों को ग्रे मोल्ड, राइजोफोस रॉट और लिथर रौट (सड़न) से नकुसान हो सकता है। इसके नियंत्रण के लिये उचित फंफुदी नाशक का छिड़काव करना चाहिये।

पो'ाक तत्व : स्ट्रॉबेरी की एक कप (144ग्राम) में लगभग45 कैलोरी (188 जूल) शामिल है और विटामिन सी और फ्लैवोनॉइड का एक बहुत अच्छा स्त्राते हैं।

खतरे के साथ भी किया जा सकता है उत्पादन :– संतरे के पौधों के नीचे मल्च विधि से इसका रोप कर अच्छा उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है।